प्रमाण क्या है?

ज्ञान के साधकतम उपकरण की विज़ुअल खोज

न्याय दीपिका (1.10) के आलोक में | आचार्य अभिनव धर्मभूषण यति

www.JainKosh.org

सम्यक् ज्ञानं प्रमाणम्

सम्यक्

संशय, विपर्यय, और अनध्यवसाय से रहित।

ज्ञानं

विशुद्ध जानने की शक्ति (ज्ञाता, प्रमिति, और प्रमेय से भिन्न)।

प्रमाणम्

जानने का अचूक और अनिवार्य साधन।

www.JainKosh.org

ज्ञान-प्रक्रिया के 4 स्तंभ

प्रमाता

कर्ता। जो जानता है
(जैसे: आत्मा या ज्ञाता)।

प्रमेय

विषय। जिसे जाना जाता है
(जैसे: घड़ा या पुस्तक)।

प्रमिति

भाव/फल। जानने की क्रिया
या उत्पन्न जानकारी।

प्रमाण

करण साधन।
जिसके द्वारा जाना जाता है।

www.JainKosh.org

प्रमाण का सही प्रश्न क्या है?

कौन जानता है?
(कर्तृ साधन)

उत्तर: प्रमाता (ज्ञाता)

किसके द्वारा जाना जाता है?
(करण साधन)

उत्तर: ज्ञान (प्रमाण)

प्रमीयते अनेन इति प्रमाणम् (जिसके द्वारा ज्ञान रूपी फल उत्पन्न हो, वह प्रमाण है)

www.JainKosh.org

विज़ुअल एनालॉजी: फल और चाकू

फल किसके द्वारा सुधारा जाता है?

नौकर (प्रमाता/कर्ता)। नौकर फल सुधारता है, पर वह 'साधन' नहीं है।

चाकू (प्रमाण/करण)। चाकू की धार ही वह 'असली उपकरण' है जिसके द्वारा फल कटता है।

प्रमिति (Result)

> ज्ञान की प्रक्रिया में, हम 'नौकर' (आत्मा/ज्ञाता) को नहीं, बल्कि 'चाकू' (ज्ञान रूपी साधन) को खोज रहे हैं।

www.JainKosh.org

शंका: क्या ये सब भी प्रमाण हैं?

अतिव्याप्ति दोष: यदि 'जानने के साधन' को ही प्रमाण मान लें, तो यह लक्षण लक्ष्य से बाहर भी फैल जाएगा।

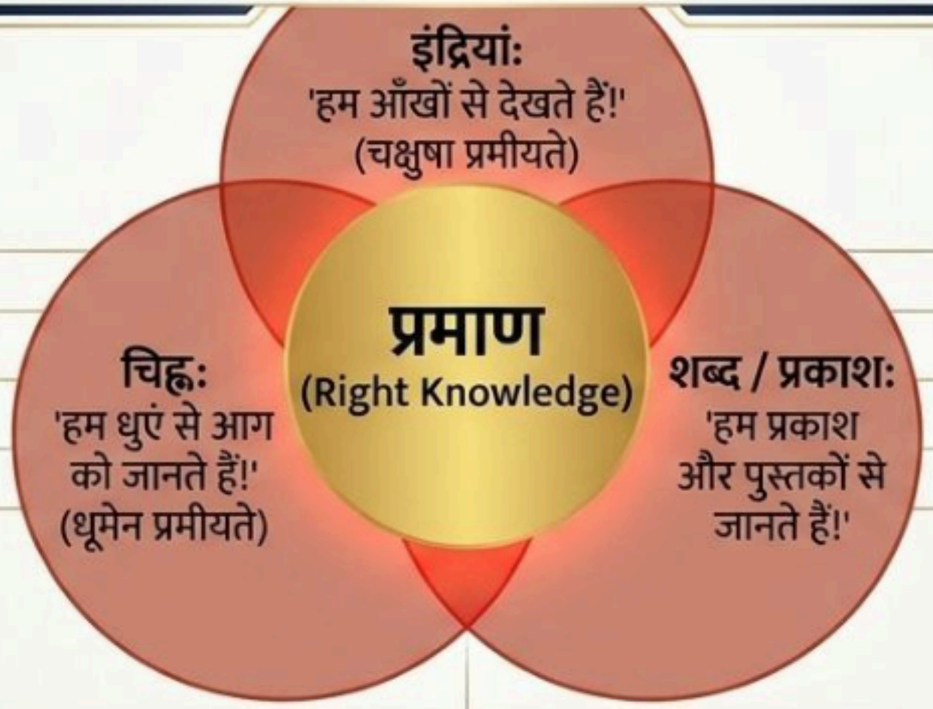

यदि ये सब साधन हैं, तो क्या ये भी 'प्रमाण' बन जाएंगे?

www.JainKosh.org

असली ‘करण’ की कसौटी

साधन (Ordinary Tools)
जो क्रिया में केवल सहायक हों

साधकतम (The Indispensable Tool)
वह उत्कृष्ट साधन, जिसके बिना क्रिया हो ही नहीं सकती

हर साधन प्रमाण नहीं होता। प्रमाण केवल वही है जो ‘साधकतम’ (Indispensable) हो।

www.JainKosh.org

दृष्टांत: रोटी का ‘साधकतम’ क्या है?

सहकारी साधन (Substitutable)

गैस, हीटर, चकला, बेलन, हाथ। (ये बदल सकते हैं। गैस न हो तो चूल्हे पर रोटी बन सकती है।)

Process of making a Roti

आटा (Flour) - साधकतम (Indispensable)

जो घटक बदल जाएं या जिनके बिना भी किसी तरह काम हो जाए, वे ‘करण’ नहीं हैं।
रोटी रूपी क्रिया का असली ‘करण’ केवल आटा है।

www.JainKosh.org

इंद्रियों का खंडन: साधन बनाम साधकतम

	ज्ञान में सहायक?	क्या इसके बिना ज्ञान संभव है?	निष्कर्ष
इंद्रियां (Senses/Light)	✅ हाँ	✅ हाँ (अंधे व्यक्ति या अतींद्रिय ज्ञानी को बिना आँखों के भी ज्ञान होता है)	**अकरण** (Not Indispensable)
सम्यक् ज्ञान (Knowledge Attribute)	✅ हाँ	❌ नहीं (बिना ज्ञान-गुण के किसी भी अवस्था में जानना संभव नहीं)	**साधकतम करण** (The True Instrument)

महा-सिद्धांत

प्रमिति क्रिया प्रति यत् करणं तत् प्रमाणम्

प्रमिति (जानने रूपी क्रिया) के प्रति जो **साधकतम** (सबसे अनिवार्य साधन) है, **वही प्रमाण है।**

ज्ञान ही वह 'आटा' है जिसके बिना जानने की 'रोटी' नहीं बन सकती। इंद्रियां, प्रकाश, और चिह्न केवल बाहरी सहयोगी हैं, वे प्रमाण नहीं हैं।

www.JainKosh.org

आध्यात्मिक फलितार्थ

अज्ञान / बाहरी खोज

हमारी भूल: हम बाहरी वस्तुओं, गैजेट्स, और इंद्रियों में ज्ञान खोजते हैं। हम 'साधनों' को ही ज्ञान मान बैठते हैं।

सम्यक् ज्ञान / भीतर की ओर

परम सत्य: ज्ञान का सबसे बड़ा और एकमात्र अनिवार्य साधन (साधकतम) स्वयं हमारी आत्मा का 'ज्ञान-गुण' है।

ज्ञान बाहर से नहीं आता, वह भीतर से उद्भासित होता है। केवल सम्यक् ज्ञान ही हमारा असली प्रमाण है।

www.JainKosh.org